श्री राम चंद्र मिशन

ECHOES
इंडिया
समाचार पत्र

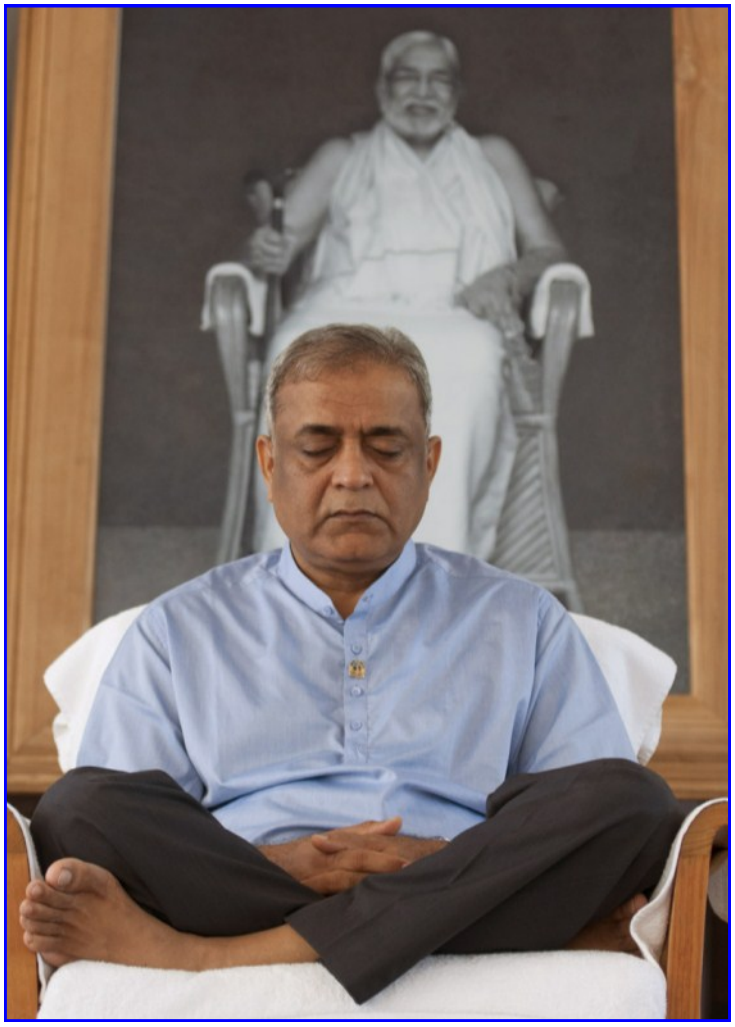

२०१५
नव वर्ष पर सन्देश

"मैं यह चाहता हूँ कि हम सब अपना परिचय इस प्रकार दें कि जब हम से पूछा जाये 'आप क्या हैं?' तो हमारा उत्तर हो, 'मैं एक अभ्यासी हूँ', क्योंकि यह मेरे जीवन की, मेरे हृदय की मुख्य बात है । यह मेरे हृदय पर स्थायी रूप से अंकित हो जाना चाहिये कि मैं एक अभ्यासी हूँ । प्रत्येक क्षण इस पर इतना अधिक जोर दिया जाना चाहिये कि उनके प्रेममय स्मरण के बिना एक क्षण भी न गुजरे, इसके बिना व्यतीत प्रत्येक क्षण का पश्चात्ताप होना चाहिये । अन्यथा वर्ष के बाद वर्ष गुजर जायेंगे, जीवन उसी प्रकार व्यर्थ हो जायेगा, जिस प्रकार मरुस्थलों में नदियाँ विलुप्त हो जाती हैं । हमारा अस्तित्व भी समय के इस कालातीत सागर में लुप्त हो जायेगा ।"

कमलेश डी० पटेल, १ जनवरी २०१५, मणपाक्कम

मणपाक्कम से समाचार

अक्टूबर २०१४

बुधवार १ अक्टूबर को गुरुदेव व्हील चेयर पर बैठकर बाहर आये तथा दो अक्टूबर से आरम्भ होने वाले पाँच दिवसीय चीनी सेमिनार में भाग लेने के लिये आये हुये लगभग २० नये अभ्यासियों से मिले । ४ अक्टूबर को सायंकाल ६ बजे तक गुरुदेव कॉटेज के प्रवेश द्वार पर एकत्रित चीन एवं दक्षिण अफ्रीका के अभ्यासियों के साथ लगभग एक घण्टा बैठे । एक भाई, जो अनुवाद करते जा रहे थे, की सहायता से गुरुदेव ने उस समूह के साथ संवाद किया । तत्पश्चात् कार्यक्रम के समन्वयकों ने अभ्यासियों का गुरुदेव से परिचय कराया । एक अभ्यासी ने विशिष्ट चीनी शैली में बाँसुरी पर दो गीत प्रस्तुत किये जिनका गुरुदेव एवं वहाँ उपस्थित सभी लोगों ने खूब आनन्द लिया । इस सत्र के बाद गुरुदेव काफ़ी थक गये थे, अत: वे सीधे सोने चले गये।

ऑस्ट्रेलियाई सेमिनार

५ अक्टूबर को ब्रिसबेन में चल रहे ऑस्ट्रेलियाई सेमिनार के साथ लाइव कॉन्फ्रेन्स के दौरान कमलेश भाई ने बताया कि यद्यपि गुरुदेव शारीरिक रूप से कष्ट में हैं, तो भी वे प्रफुल्लित स्वीकार्यता के साथ अपना कर्तव्य पूरा कर रहे हैं तथा ऐसा करते हुए अपने आस पास मौजूद सभी लोगों के अन्दर आह्लाद एवं आध्यात्मिक उत्कर्ष की अनुभूति का संचार कर रहे हैं । अपनी शारीरिक रुग्णता के बावजूद वे सब की, चाहे वह आश्रम में हों या कहीं दूर, आध्यात्मिक सेवा के प्रति चिन्तित रहते हैं । जब कमलेश भाई ने यह बताया कि गुरुदेव अपनी बीमारी के लिये ऐसी कोई चिकित्सा स्वीकार नहीं करते हैं जो उन्हें संक्रमण के प्रति असुरक्षित बना दे और जिसके कारण वे अभ्यासियों से न मिल सकें, तो सभी अभ्यासियों के हृदय द्रवित हो गये ।

श्री राम चंद्र मिशन

एकोज़ इंडिया समाचार पत्र

ब्रिसबेन में लगभग एक सौ अभ्यासी तथा तीस बच्चे 'आनन्द के साथ ध्यान कीजिये' विषय पर एक राष्ट्रस्तरीय सभा में एकत्रित हुये थे।

चीनी सेमिनार

लगभग ११ बजे गुरुदेव बाहर निकल कर कॉटेज के सामने आये और फ़िर चीन के अभ्यासियों के साथ एक सामूहिक फ़ोटोग्राफ़ लिया गया। सोमवार ६ अक्टूबर का दिन चीनी सेमिनार का अन्तिम दिन था। कमलेश भाई ने अन्तिम सत्संग कराया।

अक्टूबर के दूसरे सप्ताह में गुरुदेव की दिनचर्या कुछ बदल गयी। वे काफ़ी देर से ९:३० बजे के बाद या किसी दिन १०:०० बजे उठते थे, नाश्ता करते और फ़िर कुछ देर तक समाचार सुनते थे। कुछ दिन वे अपने कक्ष से निकल कर बाहर आते और कुछ देर धूप में बैठते। फ़िर वे विश्राम के लिये चले जाते तथा लगभग तीन बजे उठते और फ़िर दिन का भोजन ग्रहण करते थे। दोपहर बाद थोड़ी देर टेलीविजन

देखते, कुछ समय पुस्तक वाचन सुनते और बाद में सायंकाल बाहर आते थे। ज्यादा समय गुरुदेव मौन ही रहते थे, यहाँ तक कि अभ्यासियों से मुलाकात के समय भी वे केवल आशीर्वाद भर देते थे।

मंगलवार ७ अक्टूबर को ओमेगा स्कूल की जिस छात्रा ने पहले भी पियानो बजाया था उसने आकर एक बार फ़िर पियानो बजाया। गुरुदेव वहाँ बैठे और मौन रहकर सुनते रहे।

यू०एस० सेमिनार के साथ वीडियो कॉन्फ्रेंस:

११ अक्टूबर को कमलेश भाई ने यों ही गुरुदेव को यू०एस० सेमिनार में भाग ले रहे अभ्यासियों को सम्बोधित करने के लिये वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग की योजना के बारे में बताया। कमलेश भाई ने गुरुदेव से पूछा कि क्या वे अभ्यासियों को सम्बोधित करेंगे। गुरुदेव ने कहा "क्यों नहीं?" कमलेश भाई ने वहाँ हर एक को बताया कि वे इस के द्वारा सबको आश्चर्यचकित कर देंगे। उस दिन रात्रिभोज के पश्चात् गुरुदेव ने अभ्यासियों को सम्बोधित किया। वे इस दौरान मोलेना, मोनरो, सेनहोजे, टेक्सास इत्यादि बड़े केन्द्रों के अभ्यासियों को वीडियो स्क्रीन पर देख सके। गुरुदेव ने लगभग २०–३० मिनट की वार्ता दी। गुरुदेव इतनी बड़ी संख्या में संयुक्त राज्य अमेरिका के अभ्यासियों को सम्बोधित कर काफ़ी प्रसन्न दिख रहे थे।

१० से १२ अक्टूबर के सप्ताहान्त में यू०एस० के ६ बड़े केन्द्रों में वहाँ के अभ्यासी 'प्रेम से परिपूर्ण हृदय का निर्माण' विषय पर एक राष्ट्र स्तरीय विचार गोष्ठी में भाग लेने के लिये एकत्रित हुये थे। अपने संबोधन में गुरुदेव ने सब से यह समझने का आग्रह किया कि अब हम अपने हृदयों का उपयोग करने के लिये पर्याप्त रूप से परिपक्व हो गये हैं। "इस का कैसे उपयोग करें? एक मात्र तरीका है प्रेम करना"। उन्होंने कहा कि जब हम हृदय का उपयोग करते हैं तो हम गलती नहीं कर सकते। हमें इसका उपयोग करने से डरना नहीं चाहिये। इसमें कोई जोखिम नहीं है। हृदय के बिना किंचित मात्र भी आध्यात्मिक जीवन नहीं है।

अक्टूबर २२–२३: दीपावली उत्सव – २२ अक्टूबर को कमलेश भाई ने सत्संग कराया। गुरुदेव सुबह बाद में बाहर आये। वे इस बात से काफ़ी अप्रसन्न थे कि वे ध्यान कक्ष में जा सकने में समर्थ नहीं हो सके थे। दोपहर बाद उन्होंने उन कुछ अभ्यासियों से मुलाकात की जो प्रात: काल से उनके दर्शन पाने के लिये प्रतीक्षा कर रहे थे।

सायंकाल गुरुदेव ने गोल्फ़ कार्ट में बैठ कर आश्रम में चारों ओर भ्रमण किया। अभ्यासियों की भीड़ बहुत अधिक थी। क्योंकि हर कोई उनको देखने के लिये धक्का–मुक्की कर रहा था, सुरक्षा कर्मियों को स्थिति पर नियन्त्रण करने में बहुत कठिनाई का सामना करना पड़ा। इस पर भी गुरुदेव बहुत से अभ्यासियों से मिले। कॉटेज में वे सबको यह कह रहे थे कि वे पुन: बाहर जाना चाहते हैं, क्योंकि बहुत से लोग सिर्फ़ उनसे मिलने के लिये वहाँ आये हैं। गुरुवार के दिन यद्यपि गुरुदेव बाहर नहीं आ सके लेकिन उन्होंने खुद को उपलब्ध करा दिया ताकि अभ्यासी कॉटेज में आकर उनसे मिल

सकें । वहाँ पर एक उत्सव का सा वातावरण था । वहाँ चारों तरफ़ दीपक जल रहे थे जो कॉटेज के साथ ही सभी के हृदयों को भी प्रकाशित कर रहे थे ।

शुक्रवार, २४ अक्टूबर :

गुजरात से आयी बहिनों द्वारा शाम को सत्संग भवन में गरबा नृत्य प्रस्तुत किया गया; गुरुदेव ने अपने कक्ष से सी०सी०टी०वी० के माध्यम से इसे देखा । जिन बहिनों एवं बच्चों ने इसे प्रस्तुत किया वे गुरुदेव से मिलने कॉटेज में आये । उन्होंने (गुरुदेव) सभी से बात की तथा प्रत्येक प्रतिभागी को उपहार भेंट किये और कहा, "यह उपहार कीमती है, इसे किसी और को मत देना ।" अभ्यासियों ने यह कहते हुये उत्तर दिया, "गुरुदेव हमारे लिये आप बहुमूल्य हैं तथा आप जो भी देते हैं, वह भी बहुत मूल्यवान होता है ।"

रविवार, २६ अक्टूबर : गुरुदेव का अभ्यासियों को सम्बोधन:

गुरुदेव ने अच्छा महसूस किया कि वे इतने सारे लोगों को अमेरिकी सेमिनार में सीधे वीडियो लिंक के द्वारा सम्बोधित कर सके और कहा, "अच्छा होगा कि ऐसे और कार्यक्रम किये जायें ।" अगले ही दिन कमलेश भाई ने सारी व्यवस्था कर दी और घोषित किया कि गुरुदेव पूरे विश्व में सभी अभ्यासियों को सीधे वैब-कास्ट के द्वारा सम्बोधित करेंगे।

गुरुदेव प्रात: काफ़ी जल्दी तैयार हो गये थे; लेकिन नाश्ते से पूर्व वे कह रहे थे, "मुझे सभी अभ्यासियों को सम्बोधित करना है लेकिन मैं नहीं जानता कि मुझे क्या कहना है । खैर कुछ कुछ आ जायेगा", ऊपर की ओर इशारा करते हुये । गुरुदेव ने लगभग ५० मिनट तक विश्व के विभिन्न देशों के श्रोता अभ्यासियों को सम्बोधित किया, जो आश्रमों व केन्द्रों पर एकत्र हुये थे अथवा अपने घर से ही उन्हें सुनने के लिये सम्मिलित थे । वार्ता के पश्चात् गुरुदेव के चेहरे पर संतुष्टि का भाव देखा जा सकता था; कई महिनों के बाद उन्होंने एक बड़ी सभा को सम्बोधित किया था । वार्ता के बाद गुरुदेव एक घण्टे के लिये बाहर बैठ गये । इस वार्ता के तुरन्त बाद गुरुदेव को कई ई-मेल प्राप्त हुये, जिसमें अभ्यासियों ने बताया कि उन्होंने कैसा महसूस किया और वार्ता का कैसा प्रभाव रहा और यह सुनकर गुरुदेव बहुत प्रसन्न थे ।

सोमवार, २७ अक्टूबर : गुरुदेव का लघु भ्रमण

अचानक गुरुदेव ने निश्चय किया कि वे एक अभ्यासी के यहाँ जायेंगे, जिसके घर का शुभारम्भ होना था । वे अपनी गोल्फ़ गाड़ी में गये, प्रसाद बाँटा, घर के चारों ओर घूमे, रसोई में गये और चूल्हा जलाया, जिसमें दूध उबल रहा था । गुरुदेव फ़िर हॉल में बैठ गये जहाँ बच्चों ने कुछ पारम्परिक कर्नाटक गीत गाये । उसके बाद वे कॉटेज में वापस आ गये ।

बुधवार, २९ अक्टूबर को गुरुदेव ने छोटा सत्संग कराया और फ़िर एक विवाह सम्पन्न किया । एक लम्बे समय बाद कॉटेज में विवाह होते देखना बहुत ही सुखद दृश्य था । इस अवसर पर सामूहिक फ़ोटोग्राफ़ लिये गये तथा वातावरण बहुत ही खुशनुमा था ।

३१ अक्तूबर को गुरुदेव के स्वास्थ्य में गिरावट आ गयी । कुछ परीक्षण किये गये तथा भाई कृष्णा रात को उनके साथ रहने के लिये आ गये ।

नवम्बर २०१४

गुरुदेव का स्वास्थ्य

नवम्बर के प्रारम्भ में यह निश्चित हो गया था कि गुरुदेव को संक्रमण हो गया है, इसलिये प्रतिजैविक (एन्टीबायोटिक) दवाइयाँ शुरु कर दी गयीं । एक सुबह गुरुदेव बहुत खुश लग रहे थे जब वे अपने कार्यालय कक्ष में आये । उन्होंने नाश्ता किया, समाचार सुने तथा लगभग तुरन्त ही 'प्रधानमन्त्री' (भारत के प्रधानमन्त्री के बारे में दूरदर्शन धारावाहिक) देखना चाहा । उसके बाद उन्होंने कुछ देर के लिये बाहर बैठने का निश्चय किया ।

बाद में उस सप्ताह गुरुदेव को कमर दर्द से सम्बन्धित स्कैन (बारीक जाँच) के लिये एम०आई०ओ०टी० अस्पताल ले जाया गया । यह भी पाया गया कि गुरुदेव अपना दाहिना हाथ ठीक से नहीं उठा पा रहे हैं, लेकिन ससमय एवं प्रभावी उपचार के कारण इसका गुरुदेव के स्वास्थ्य पर न्यूनतम प्रभाव पड़ा । उनका संक्रमण एक सप्ताह में ठीक हो गया तथा उनके दाहिने हाथ ने भी धीरे धीरे दोबारा सही कार्य करना आरम्भ कर दिया था । फ़िर भी डाक्टरों ने यह स्पष्ट किया कि गुरुदेव के संक्रमण के कारण कॉटेज के अन्दर एक बार में बहुत अधिक लोग नहीं होने चाहिये।

गुरुदेव ने अपने दाहिने हाथ को सामान्य बनाने के लिये कुछ व्यायाम किये । कुछ दिनों के लिये जर्मनी से आयी एक बहिन ने गुरुदेव के हाथ की मालिश की और इसका सकारात्मक प्रभाव दिखायी दिया । गुरुदेव ने अपना नाम लिखने का अभ्यास किया । वे हल्के से अपनी

श्री राम चंद्र मिशन एकोज़ इंडिया समाचार पत्र

युवा संगोष्ठी में प्रतिभागियों के साथ

पैन पकड़ते और बहुत धीरे से लिखने का प्रयास करते । धीरे–धीरे सुधार दिखायी देने लगा । अपने निर्धारित कार्य पर वापिस लौटने के प्रति गुरुदेव के दृढ़ निश्चय को देखना बहुत प्रेरणादायक था । चिकित्सक कह रहे थे, "गुरुदेव के लिये यह हमेशा भौतिक बाधाओं पर इच्छा शक्ति की विजय है ।" नवम्बर में दूसरे सप्ताहान्त के आने तक वे केवल कुछ ही कठिनाई के साथ लिखने योग्य हो गये और यहाँ तक कि एक प्रशिक्षक के प्रमाणपत्र पर हस्ताक्षर भी किये ।

दूसरे सप्ताह में गुरुदेव के स्वास्थ्य में निश्चित रूप से कुछ सुधार हुआ । एक अवसर पर वे अपने शयनकक्ष के बाहर बैठे और तरोताजा दिखाई दे रहे थे । उन्होंने कमलेश भाई से उनके साथ वहीं पर नाश्ता ग्रहण करने का अनुरोध किया । गुरुदेव ने ध्यानपूर्वक समाचार सुने । वे लगातार बाहर बैठे रहे और एक घण्टे से भी अधिक समय तक उन्होंने स्वर्गीय भीमसेन जोशी (भारतीय गायक) द्वारा गाये दो गीत सुने, जिन्हें कमलेश भाई ने अपने कम्प्यूटर पर चलाया । गुरुदेव अपनी आँखें बन्द कर सुन रहे थे । कोई भी यह महसूस कर सकता था कि जब संगीत बज रहा था तब गुरुदेव हर एक के ऊपर काम कर रहे थे । एक नयी अभ्यासी बहिन जो कि मुम्बई में एक विश्वविद्यालय की निर्देशक हैं, गुरुदेव के साथ बैठी थी । इस बहिन ने बाद में अपना परिचय दिया और उन्होंने आपस में संक्षिप्त विचार विमर्श किया । तत्पश्चात् गुरुदेव विश्राम करने के लिये भीतर चले गये । यह सम्पूर्ण सत्र लगभग तीन घण्टे तक चला ।

शुक्रवार, २१ नवम्बर

गुरुदेव एक नवविवाहित युगल से मिले, जो यहाँ उनका आशीर्वाद ग्रहण करने आये थे । तत्पश्चात् गुरुदेव कॉटेज के बाहर धूप में बैठने हेतु आये। बाद में अभ्यासी धीरे–धीरे भीतर आना प्रारम्भ हुये और शीघ्र ही दरवाजे खोल दिये गये ताकि सभी भीतर आ सकें और गुरुदेव के समीप बैठ सकें ।

इन बाह्य प्रांगण के सत्रों में गुरुदेव अधिकांशत: मौन बैठे रहते और हर कोई इसी वातावरण में डूबे रहता । कभी कभी अभ्यासी कोई ऐसा विषय लेकर आते जिसमें वार्तालाप होने लगता ।

रविवार, २३ नवम्बर को चिन्ता होने लगी क्योंकि गुरुदेव एक अन्य संक्रमण से ग्रसित हो गये थे । कुछ परीक्षण किये गये और एक बार फ़िर से उन्हें एन्टीबायोटिक औषधियाँ देना प्रारम्भ किया गया । यह देख पाना अत्यन्त कठिन था कि गुरुदेव के पूरे शरीर में भयंकर पीड़ा हो रही थी । वे कई दिनों तक बिस्तर पर पड़े रहे ।

युवा संगोष्ठी

शुक्रवार २८ नवम्बर को गुरुदेव युवा संगोष्ठी के प्रतिभागियों के साथ समय व्यतीत करने प्रात: लगभग १०:१५ बजे कॉटेज से बाहर आये । यह संगोष्ठी सोमवार के दिन प्रारम्भ हुई थी और अब समाप्त होने को आ रही थी । पूरे देश से लगभग २५० प्रतिभागी आये थे । प्रतिदिन कमलेश भाई ने प्रात: ६:३० बजे का सत्संग कराया और प्रात: ९:०० बजे वार्ता दी । संगोष्ठी में सामूहिक परिचर्चा तथा शाम के समय देखने हेतु कुछ मनोरंजक चलचित्र और वृत्तचित्र भी सम्मिलित थे ।

गुरुदेव बाहर बैठे और संगोष्ठी में सम्मिलित सभी अभ्यासियों को कॉटेज के भीतर आने की अनुमति दी गयी । पिछले रविवार जब गुरुदेव को संगोष्ठी के बारे में जानकारी हुयी तो उन्होंने कहा था – "मैं इस कथन में विश्वास रखता हूँ, 'उन्हें युवावस्था में पकड़ो ।'" गुरुदेव ने अधिक वार्तालाप नहीं किया परन्तु एक भाई को दस उसूलों को प्रस्तुत करने का अवसर प्रदान किया गया । गुरुदेव ने इस प्रस्तुतिकरण को सुना और भीतर जाने से पूर्व युवाओं के साथ ९० मिनट व्यतीत किये ।

शनिवार २९ नवम्बर: समाचार लेख

विगत दो वर्षों में चार्टर्ड एकाउन्टेन्सी पाठ्यक्रम लेने में महिलाओं की संख्या में ५०% की वृद्धि होने का लेख पढ़ कर गुरुदेव ने कहा कि वह यह समाचार सुन कर प्रसन्न हुये। उन्होंने टिप्पणी की, "मैं कई वर्षों से हमारी लड़कियों से कहता रहा हूँ कि यह उनके लिये एक सुरक्षित नौकरी का अवसर है । उनके लिये कार्य समय का लचीलापन होगा और उन्हें रात्रि के समय कार्य करने की आवश्यकता नहीं है और इसी तरह की अन्य बातें जो कि बहुत खतरे वाली होती हैं ।"

तत्पश्चात् वार्तालाप सामान्य चर्चा में बदल गया और गुरुदेव ने टिप्पणी की कि आवश्यकतायें किस प्रकार बढ़ती जा रही हैं । उन्होंने कहा, "हमारे दिनों में एक ही आकार, क्षमता के रेफ्रीजरेटर होते थे, जो कि एकमात्र विकल्प होता था । अब आप बड़े से बड़ा रेफ्रीजरेटर पाते हैं और जो उसमें रखा जाता है वह है उपयोग के बाद बचा हुआ पिज्जा, पास्ता और इसी प्रकार की दूसरी चीजें । जब आपके पास एक कार है, तो दूसरी कार की इच्छा होती है । मैं महसूस करता हूँ कि हमें अपनी आवश्यकतायें मूलभूत न्यूनतम स्तर तक सीमित करनी चाहिये और तभी हम प्रसन्न और संतुष्ट रह सकते हैं ।"

श्री राम चंद्र मिशन एकोज़ इंडिया समाचार पत्र

दिसम्बर २०१४

अंतिम सप्ताह

प्रशिक्षकों के लिये सामूहिक सिटिंग:

३ व ४ दिसम्बर को पूज्य गुरुदेव ने ३९ नये प्रशिक्षकों के समूह को अन्तिम सामूहिक सिटिंग दी । उन्होंने किसी प्रकार प्रमाणपत्रों पर हस्ताक्षर भी किये । आगामी दिनों में पूज्य गुरुदेव समान्यत: नाश्ते के तुरन्त बाद आराम के लिये चले जाते थे और फ़िर दोबारा दोपहर में ही जागते थे ।

८८० वोल्ट की प्राणाहुति:

अमेरिका से एक ८३ वर्षीय अभ्यासी आये और पूज्य गुरुदेव से मिलने के लिये चार घण्टे से अधिक इंतजार किया । अंतत: जब वह मिले, अभ्यासी ने कहा, "गुरुदेव, मुझे याद है एक अवसर पर आपने सिटिंग शुरु की थी और प्राणाहुति ८८० वोल्ट शक्ति जैसी लगती हुई मुझ में प्रवाहित हुई – मैं फर्श पर गिर पड़ा !" गुरुदेव हँसे । वह भाई आगे बोले, "मैं यह देखकर द्रवित हूँ कि आप कैसे, जो भी व्यक्ति आपके पास आता है उसको, प्राणाहुति देना जारी रखते हैं । गुरुदेव दोबारा हँसे और वहाँ पर परम नि:शब्दता का क्षण था । केवल गुरुदेव ही जानते हैं कि उस सूक्ष्म क्षण में क्या घटित हुआ, किन्तु कक्ष में उपस्थित बहुत लोग आँसुओं से द्रवित थे ।

नि:शब्द सिटिंग:

एक शाम, गुरुदेव बहुत पीड़ा में थे और उनकी आँखें बंद थीं । ऐसा लगा कि वह सोने के लिये तैयार थे, तभी अचानक उन्होंने कहा, "दैट्स ऑल ।" गुरुदेव ने बताया कि वह सिटिंग दे रहे थे । उनके खराब स्वास्थ्य के बाद भी उनका कार्य जारी था ।

बुधवार, १० दिसम्बर

भाई कृष्णा गुरुदेव के बारे में बहुत चिंतित थे और उन्होंने कॉटेज में ही रुकने का निर्णय लिया । कई दिनों के बाद, गुरुदेव बेहतर महसूस करते हुये लगे और उन्होंने अपनी गोल्फ कार्ट में बाहर जाने की योजना भी बनायी । परन्तु अगले ही दिन गुरुदेव पुनः अस्वस्थ हो गये ।

मनोरंजन:

नियमित साँयकालीन चलचित्र के अलावा, गुरुदेव ने कई टी०वी० सीरियल्स देखना जारी रखा । 'बुद्ध' सीरियल की अन्तिम कड़ियों में उनके जीवन के आखिरी दिन दिखाये गये थे और कैसे उन्होंने, यह जानते हुये कि उसमें जहर था, वह भोजन किया । किसी ने गुरुदेव से कहा, "पुराने दिनों में आपके साथ भी यही घटित हुआ था । आप जानते थे लेकिन फिर भी आपने इसे लिया ।" जब किसी ने पूछा कि कोई ऐसा क्यों करता है, गुरुदेव ने उत्तर दिया, "यह ऐसे ही होता है ।"

अपना कार्य पूर्णता से करिये:

एक दिन, एक बहिन कॉटेज में आयी और कहा, "गुरुदेव आप इतना कष्ट सह रहे हैं, कृपया मुझे आपका दर्द बाँटने की अनुमति दीजिये । गुरुदेव ने बहुत विनम्र एवं प्रेमभरी मुस्कराहट के साथ जबाब दिया, "यह वर्जित है, इसे माँगा नहीं जाता । यदि आप वास्तव में मेरे लिये कुछ करना चाहते हैं, तो अपना काम पूर्णता से करिये; यही वह सर्वोत्तम कार्य है जो आप कर सकते हैं ।

गुरुदेव का एक संदेश:

रूस से आये अभ्यासियों की सेमिनार १५ दिसम्बर, सोमवार को प्रारम्भ हुयी । अपने बिस्तर से ही, गुरुदेव ने उनके लिये एक अग्रलिखित संक्षिप्त संदेश रिकॉर्ड कराया, जिसको ध्यानकक्ष में चलाया गया: "प्रिय भाईयों व बहनों, मुझे दु:ख है कि मैं आप सबके पास नहीं आ सकता हूँ, लेकिन आत्मिक रुप से मैं आपके साथ हूँ और मैं उम्मीद करता हूँ कि आप इसे महसूस कर सकते हैं । कृपया मुझ पर विश्वास कीजिये जब मैं कहता हूँ कि मैं आप सबके साथ रहूँगा, हर समय, चाहे यहाँ या आपके रुस में या अन्य किसी देश में, यह महत्वपूर्ण नहीं है । दूरियाँ कोई फर्क नहीं डालती – इसमें कोई अन्तर नहीं है । मैं आप सबके लिये प्रार्थना करता हूँ और आपके लिये सर्वोत्तम की कामना करता हूँ । आप सभी के लिये आशीर्वाद ।"

अंतिम बार कॉटेज से बाहर:

अमेरिका से आये एक विशेष उपकरण के उपयोग द्वारा गुरुदेव को उनके बिस्तर से व्हीलचेयर में बैठाया गया और वह अंतिम बार कॉटेज से बाहर जाने में समर्थ हुये । नाश्ते एवं समाचार पत्र के पाठन के बाद, गुरुदेव ने पुस्तक पाठन के लिये कहा और अपनी आँखें बंद कर बैठे हुये सुनते रहे ।

गुरुदेव हमेशा से एक उत्साही पाठक रहे हैं और उन्होने अपनी यह अभिरुचि अंतिम समय तक बनाये रखी । दैनिक समचारपत्र पाठन के साथ–साथ, उनके लिये पुस्तक पढ़ा जाना भी उन्हें अच्छा लगता था, मुख्य रूप से तब जबकि वह सो नही पाते थे । वह बड़े ध्यान से सुनते और यहाँ तक कि पाठक का उच्चारण भी सही कराते । फ़िर कुछ समय पश्चात ही वह सो जाते ।

अंतिम दो दिन:

१८ दिसम्बर से गुरुदेव बहुत अस्वस्थ थे और अधिकांश समय सोते रहे। २० दिसम्बर की अपराह्न, गुरुदेव की दशा अस्थिर हो गयी और उन्हें साँस लेने में दिक्कत होने लगी । चिकित्सकों द्वारा उनकी दशा को स्थिर करने के तमाम प्रयासों के बावजूद, रात्रि लगभग ९:४५ बजे गुरुदेव ने अन्तिम साँस ली और इसी के साथ ही एक गौरवशाली युग का अन्त हो गया ।

श्री राम चंद्र मिशन एकोज़ इंडिया समाचार पत्र

अखिल भारतीय युवा संगोष्ठी

नवम्बर २५ से २९, २०१४

देश के सभी भागों से आये लगभग २६० प्रतिभागियों ने इस संगोष्ठी में भाग लिया, जिसका विषय था 'पवित्रता भाग्य बुनती है' । प्रतिभागियों को संगोष्ठी के पहले दो माह की व्यवस्थित तैयारी कराकर लाया गया था ।

संगोष्ठी के दौरान प्रत्येक दिन का प्रारम्भ सुबह ६.३० बजे के सत्संग से होता था जिसे कमलेश भाई करवाते थे, उसके बाद ९ बजे प्रात: उनकी वार्ता होती थी । पूरे दिन भर वार्ताओं, आत्म निरीक्षण, मौन सत्र, सामूहिक चर्चा एवं स्वयंसेवी कार्यों का अच्छा सम्मिश्रण रहता था ।

कमलेश भाई के व्याख्यानों के कुछ महत्वपूर्ण बिन्दु नीचे दिये जा रहे है :

- उन्होंने युवाओं को 'सहज मार्ग के प्रकाश में राजयोग का दिव्य दर्शन' और 'अनन्त की ओर' नामक पुस्तकें 'अवश्य पढें' की संस्तुति की ।
- संवेदनशीलता का अर्थ स्पष्ट करते हुए उन्होंने कहा, "यदि हमारी चेतना एक गर्जन करते हुए सागर की तरह हुई तो कुछ भी महसूस नहीं किया जा सकता, चाहे उसमें बड़ा पत्थर ही क्यों न गिराया जाये । इसके बदले यह एक शान्त तालाब जैसी होनी चाहिये जिसमें यदि एक छोटी पत्ती भी गिर जाती है तो लहरें पैदा हो जाती हैं ।"
- उन्होंने नींद के चक्र को बदलने पर जोर दिया और कहा प्रति दिन जल्दी सोयें और जल्दी उठें । उन्होंने बार बार इस बात पर जोर दिया कि यह छोटा सा परिवर्तन पूर्ण रूपान्तरण की चाबी है।
- उन्होंने संस्तुति की कि छोटे छोटे लक्ष निर्धारित करें और उनके माध्यम से अंतिम लक्ष पर ध्यान केन्द्रित करें।

वहाँ उनके साथ एक व्यस्त प्रश्नोत्तर सत्र भी हुआ । प्रतिदिन एक व्हिस्पर सत्र होता था जिसमें प्रतिभागियों को पवित्रता के विषय पर चयनित संदेश दिये जाते थे । अपराह्न में संप्रेषण विषय पर कुछ सत्र हुए – दिल का उपयोग (एलिजाबेथ डैनली), सहजमार्ग जीवन जीने का रास्ता (पुनीत लालभाई) और दस उसूल (ऋषि रंजन) । भाई एस० प्रकाश ने टीम निर्माण की एक गतिविधि आयोजित की, जिसने आनन्ददायक क्षणों के साथ–साथ सम्मिलित रूप से कार्य करने की महत्वपूर्ण शिक्षा भी प्रदान की । अपनी स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं के होते हुये भी, पूज्य गुरुदेव ने प्रतिभागियों के साथ कुछ समय व्यतीत किया और उन में से एक को सेक्सोफोन बजाते हुए भी सुना । जब संगोष्ठी समाप्त हुई तब सभी के मन में खुशी और अपने वास्तविक घर से बिछुड़ने के दु:ख की मिश्रित संवेदनायें थी ।

प्रशिक्षकों की तैयारी का छठा बैच

२८ नवम्बर से ७ दिसम्बर

देश भर के लगभग ३९ प्रशिक्षक उम्मीदवार सबसे बड़े बैच के रूप में इस प्रशिक्षक तैयारी कार्यशाला में उपस्थित हुये । अपनी व्यस्तता के बावजूद भी कमलेश भाई ने प्रतिभागियों के साथ समय व्यतीत किया और विनम्रता और प्यार के साथ सेवा करने के महत्व पर जोर देते हुए दो वार्तायें दी । इन प्रतिभागियों को उन सत्रों में भी आमंत्रित किया गया, जहाँ कमलेश भाई युवाओं और उत्तर पूर्व से आये प्रतिनिधियों को संबोधित कर रहे थे ।

विषय यह था कि प्रशिक्षक एक आदर्श अभ्यासी कैसे है और प्रशिक्षकों के लिये यह क्यों आवश्यक है कि वे अपने अभ्यास और चरित्र निर्माण पर ध्यान केन्द्रित करें ताकि वे गुरुदेव के उपकरण बन सकें और उनके कार्यों में भाग ले सकें । आध्यात्मिक जिज्ञासु के लिये अत्यावश्यक दृष्टि और वे महत्वपूर्ण शिक्षायें जिन्हें वे अपने–अपने केंद्रों/ आश्रमों को ले जा सकें, पर चिन्तन सत्र के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

पदाधिकारी भ्रमण

संयुक्त सचिव का दौरा, अंचल २–सी (तमिलनाडु पश्चिम)

इस दौरे का केन्द्र बिन्दु था, खुली सभाओं को संबोधित करना, अभ्यासी गृह सम्मेलनों का संचालन करना, प्रशिक्षकों से मिलना और अधिकतम समय अभ्यासियों के साथ विचारों के आदान–प्रदान में बिताना । भाई विश्वनाथ राव (अंचल प्रभारी) ने दौरे का आयोजन किया था।

८ नवम्बर के दिन भाई ए०पी०दुरई और एम०एम०धनुमूर्ति ने कग्गुची (कोटागिरि से १० कि.मी. दूर एक गाँव) में गिरि ईश्वर मैट्रिक्युलेशन स्कूल में एक खुली सभा को सम्बोधित किया जहाँ १२ कर्मचारी ध्यान आरम्भ करने के लिये आगे आये । अपराह्न में डी०एस०एस०सी०, वेलिंग्टन में हुए एक गृह सभा के बाद अरुवनकाडु केन्द्र में एक खुला सत्र हुआ जहाँ १२ जिज्ञासुओं सहित २६ लोग उपस्थित थे।

९ तारीख को २६ अभ्यासियों ने ऊटी केन्द्र में एक पूर्ण दिवसीय सत्संग में भाग लिया । भाई दुरई ने अभ्यास में स्पष्टता होने की आवश्यकता पर एवं आध्यत्मिकता के बारे में स्पष्ट व उद्देश्योन्मुख दृष्टिकोण रखने के विषय पर एक वार्ता दी । बाद में यह दल तंगाडु की एक सुन्दर बस्ती की ओर चल पड़ा, जहाँ एक भाई के घर में ९ लोग उपस्थित थे । दैनिक अभ्यास और सत्संग आयोजित करने के बारे में समझाया गया।

१० नवम्बर की सुबह ऊटी केन्द्र की खुली सभा में १५ जिज्ञासु और कुछ अभ्यासी जिन्होंने अपनी साधना बीच में छोड़ दी थी, उपस्थित थे । भाई दुरई ने अभ्यास के बारे में विस्तार से समझाया और उन्हें इसे जारी रखने के लिये प्रेरित किया । दोपहर को उन्होंने कोटगिरि में विश्व शान्ति हायर सेकेन्डरी स्कूल के ३५ शिक्षकों को संबोधित किया । उन्होंने स्वामी विवेकानन्द की कृतियों से उद्धरण दिये और समझाया कि कैसे आत्मा एक भौतिक शरीर के पिंजरे में क़ैद रहती है और संस्कारों के प्रभावों से दबी रहती है । उन्होंने यह भी समझाया कि कैसे एक समर्थ गुरु उसे विशुद्ध करते हैं तथा आकांक्षी को उसके सामने का मार्ग साफ़ करते हुए आगे बढ़ने में मदद करते हैं ।

शाम क़रीब ५:३० बजे कोयम्बटूर पहुँचने के बाद भाई दुरई १५ समन्वयक स्वयंसेवकों की बैठक में उपस्थित हुये । केन्द्र की विभिन्न गतिविधियों, उपकेन्द्रों का विकास और रविवारीय सत्संग स्थल इत्यादि की समीक्षा की गयी ।

११ तारीख को कोयम्बटूर केन्द्र के प्रशिक्षकों की २ घण्टे की एक बैठक का संचालन किया गया । यहाँ से भाई विश्वनाथ राव इस दौरे में शामिल हुए । पूर्वाह्न ११:३० बजे भाई दुरई और उनके दल ने रामनाथपुरम में येलो ट्रेन स्पेशल स्कूल का भ्रमण किया जहाँ उन्होंने क़रीब ३० अभिभावकों के समूह को 'सहज मार्ग में ध्यान' विषय पर संबोधित किया और उनके प्रश्नों के उत्तर दिये । शाम को उन्होंने पेरियनाइक्कनपालयम में एक भाई के घर में भेंट की जहाँ कुछ अतिथिगण और साधना को छोड़े हुए कुछ अभ्यासियों को सहज मार्ग के बारे में संक्षेप में समझाया । मेत्तुपालयम में दस अतिथिगण उपस्थित थे और भाई दुरई ने सहज मार्ग के बारे में बताया तथा अभ्यासियों का एक परिचर्चात्मक सत्र भी संचालित किया ।

१२ नवम्बर को वे करुमथमपट्टी की ओर गये । वहाँ अर्द्धदिवसीय कार्यक्रम में एक खुली सभा एवं अभ्यासियों के साथ एक सत्र का आयोजन था और इसका समापन सत्संग व मध्यान्ह भोजन के साथ हुआ । अपराह्न में सरवनमपट्टी का संक्षिप्त भ्रमण किया गया, जहाँ १० अभ्यासी सत्संग हेतु एकत्रित थे । आर०एस०पुरम हॉल कोयम्बटूर में, जहाँ मिशन द्वारा एक पुस्तकालय चलाया जा रहा है, लगभग १७० अभ्यासी एकत्रित थे । उनके साथ एक परिचर्चात्मक सत्र आयोजित किया गया, जिसके बाद सत्संग और रात्रि का भोजन हुआ ।

१३ तारीख को गोबिचेट्टीपालयम में १२० अभ्यासियों ने एक परिचर्चात्मक कार्यक्रम में भाग लिया जिसमें अभ्यासियों की वार्तायें, प्रश्नोत्तर सत्र तथा स्पष्टीकरण (शंका समाधान) का समावेश था । ईरोड आश्रम में ईरोड और निकटवर्ती केन्द्रों जैसे भवानी, पेरुन्दुरई एवं गोबिचेट्टीपालयम से आये १२० अभ्यासियों का सम्मेलन हुआ । १४ नवम्बर को तिरुचेनगोड केन्द्र में नामक्कल, रासीपुरम और कोमारापालयम से भी १२० अभ्यासी एकत्रित हुए थे । शाम को एक अभ्यासी के घर में ईरोड के अभ्यासियों (१६०) के साथ २ घण्टों का एक सत्र हुआ ।

१५ तारीख को पूर्वाह्न में चेट्टीपालयम (पुराना) आश्रम में प्रशिक्षकों (१५) की एक बैठक की गई और अपराह्न में एन०आइ०एफ़०टी० – टी०ई०ए० इन्स्टिट्यूट में एक खुली सभा का आयोजन किया गया जिसमें ६० विद्यार्थी एवं शिक्षकगण उपस्थित थे ।

१६ नवम्बर को तिरुपुर और निकटवर्ती केन्द्रों के अभ्यासियों के लिये डी०जे०पार्क में एक पूर्ण दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया । प्रातः सत्संग में १०५० अभ्यासी उपस्थित थे । अल्पाहार के बाद उनका एक परिचर्चात्मक सत्र हुआ, जिसके बाद 'पिक एन्ड टॉक' कार्यक्रम और एक प्रश्नोत्तर सत्र भी हुआ ।

श्री राम चंद्र मिशन

एकोज़ इंडिया समाचार पत्र

क्रेस्ट निदेशक की यात्रा

पनवेल आश्रम, मुम्बई

क्रेस्ट बंगलौर के निर्देशक, भाई मोहनदास हेगड़े ने ९ नवम्बर को पनवेल आश्रम का भ्रमण किया । उन्होंने अभ्यासियों को दैनिक साधना की आवश्यकता और महत्व के बारे में बताया । उन्होंने दोहराया कि हमें सहज मार्ग जीवन का दिन–रात सारे दस नियमों के अभ्यास द्वारा पालन करना चाहिये । उन्होंने लालाजी और बाबूजी की कुछ महत्वपूर्ण शिक्षाओं के बारे में अभ्यासियों को याद दिलाया ।

तिरुप्पुर

भाई मोहनदास हेगड़े, २८ नवंबर को तिरुप्पुर पहुँचे । डी०जे० पार्क में, प्रशिक्षकों के लिये 'मेरी स्वयं की स्थिति को पढ़ना' विषय पर कार्यक्रम आयोजित किया गया था । उन्होंने प्रशिक्षकों को दस मिनट के लिये ध्यान में बैठने को कहा और उसके उपरान्त प्रत्येक से कहा गया कि वे अपनी डायरी में लिखें कि उन्हें ध्यान के दौरान कैसा महसूस हुआ । उन्होंने क्रेस्ट में की जाने वाली विभिन्न गतिविधियों के बारे में संक्षेप में विवरण दिया । उन्होंने ध्यान में तीन प्रकार के अवलोकन के बारे में भी बताया – आसन, स्थिति, अनुभव और पद्धति।

२९ नवंबर को, तिरुप्पुर और आस–पास के केंद्रों के १४० युवाओं के लिये 'सहज मार्ग के सैनिक' नामक दो दिवसीय आवासीय कार्यक्रम संचालित किया गया । सुबह का कार्यक्रम ४.३० बजे उठने

के साथ आरम्भ होता था और उसके बाद व्यक्तिगत ध्यान, पैदल चलना एवं कसरत और फ़िर ७.३० बजे सत्संग किया जाता था । नाश्ते के बाद कई विषयों पर प्रस्तुति दी गयी जैसे 'स्वयं सेवकों के गुण', 'स्वयं सेवक की भूमिका' और 'युवावस्था के उत्साह को बनाये रखना' । दोपहर के बाद स्वयं सेवकों के गुण, भूमिका और प्रतिबद्धता के बारे में संवादात्मक सत्र आयोजित किया गया । शाम के समय फ़िल्म दिखायी गयी । अनौपचारिक चर्चा के साथ रात्रि ९.३० बजे सत्र का समापन हुआ ।

दूसरे दिन 'अभ्यास के सूक्ष्म पहलू', 'दस नियम – मेरी पद्धति' और 'जीवन की सहज मार्ग विधि' के बारे में सत्र रखे गये । दोपहर के बाद एक फ़िल्म दिखायी गयी । कार्यक्रम ६ बजे शाम समाप्त हुआ । सारे युवा प्रफ़ुल्लित थे और उन्होंने सहज मार्ग के सिपाही बनने का संकल्प लिया ।

मणप्पाक्कम में अभ्यासियों का भ्रमण

हल्द्वानी, शोलापुर और कोल्हापुर केंद्रों से करीब ३२३ अभ्यासियों ने १० से १२ दिसम्बर २०१४ तक आयोजित तीन दिवसीय संगोष्ठी में बी०एम०ए० मणपाक्कम का भ्रमण किया । उनके प्रवास के दौरान गुरुदेव की शिक्षायें, तीन 'एम' और उनकी शंकाओं को दूर करने के लिये प्रश्नोत्तरी सत्र रखे गये । प्रशिक्षकों की एक बैठक भी हुई ।

नये प्रकाशनों का विमोचन

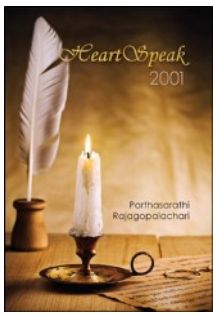

हार्ट स्पीक २००१
अंग्रेजी

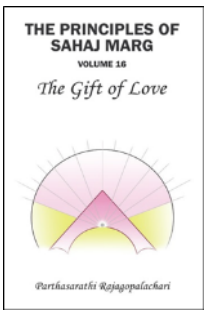

दी प्रिन्सिपिल्स ऑफ़ सहजमार्ज – वॉल्यूम १६
(दी गिफ़्ट ऑफ़ लव)
अंग्रेजी

हार्ट स्पीक २०११
तेलुगु

नयी नियुक्तियाँ

कैप्टन विनीत राणावत
संयुक्त सचिव एवं
कार्य समिति सदस्य

श्रीकुमार केसवन
केन्द्र प्रभारी, अलुवा

रवींद्र कुमार सिन्हा
शाहजहाँपुर आश्रम प्रबन्धक

श्री राम चंद्र मिशन एकोज़ इंडिया समाचार पत्र

यू–कनेक्ट कार्यक्रम

संकाय प्रशिक्षण, वर्धा, महाराष्ट्र

२९ और ३० नवंबर को वर्धा आश्रम में इस अंचल के यू–कनेक्ट संकाय सदस्यों के लिये, एक दो दिवसीय उन्मुखीकरण कार्यक्रम एवं बनावटी सत्र का आयोजन किया गया । नागपुर, चंद्रपुर, वर्धा, यवतमाल और भंडारा से अभ्यासियों ने सहभागिता की । छः प्रशिक्षित यू–कनेक्ट संकाय सदस्यों ने हिंदी और मराठी में बनावटी सत्र का संचालन किया । विभिन्न मानवीय मूल्यों को प्रदर्शित करने एवं उन्हें अन्तरतम् में अवस्थित करने के लिये खेल और क्रियायें करायी गयीं ।

जयपुर, राजस्थान

यू–कनेक्ट पहल के अन्तर्गत प्रथम आत्म विकास कार्यक्रम (एस०डी०पी०) के सदस्यों का रविवार १६ नवम्बर को आंचलिक आश्रम में अभिनन्दन किया गया । आर्क पॉइन्ट कन्सल्टैन्ट्स प्राइवेट लिमिटेड से छः नवसीखों का सम्मान किया गया । सत्र का प्रारम्भ यू –कनेक्ट के ध्येय कथन की प्रस्तुतिकरण के साथ हुआ । यह एस०डी०पी० कार्यक्रम १६ सप्ताह का था, जो १९ जुलाई २०१४ को समाप्त हुआ । सत्रह स्वयं सेवकों ने अलग–अलग योग्यताओं – जैसे संकाय, फ़ेसिलिटेटर, समन्वयक, आइ०पी० विशेषज्ञ इत्यादि – में सहायता की । इन नये सीखने वालों में से २ प्रतिभागियों ने आरम्भिक सिटिंग ले ली है । भाई संदीप नय्यर (अंचल ७ के समन्वयक) ने अभ्यासियों को यू–कनेक्ट की भावी परियोजनाओं में सहभागिता करने के लिये आमंत्रित किया । प्रतिभागियों ने भी अपना दृष्टिकोण साझा किया तथा अपने अन्दर के परिवर्तन को देखा और एक संतुलित जीवन जीने के कौशल पर चिन्तन किया । दूसरा एस०डी०पी० कार्यक्रम २९ नवम्बर को जयपुर में प्रारम्भ किया गया ।

चंडीगढ़, पंजाब

२२ नवंबर को पंजाब विश्वविद्यालय में १२ सप्ताह के एस.डी.पी

प्रमाण–पत्र कार्यक्रम का उद्घाटन समारोह आयोजित किया गया । कुलपति प्रोफ़ेसर ग्रोवर ने अपने उद्घाटन भाषण में इस समारोह का हिस्सा बनने पर अपनी खुशी व्यक्त की और बताया कि इसने कैसे उन्हें अन्तरावलोकन के लिये अभिप्रेरित किया है । वे काफ़ी प्रभावित हुये थे और इस बात पर ज़ोर दिया कि इस पाठ्यक्रम का गुणक प्रभाव पड़ना चाहिये तथा इसे ३००० विद्यार्थियों तक पहुँचना चाहिये । उन्होंने कहा कि वास्तव में सारे विद्यार्थियों को इस कार्यक्रम में भाग लेना चाहिये, क्योंकि आत्म विकास आज समय की आवश्यकता है ।

मिशन के अनेक अभ्यासी और प्रशिक्षक कार्यक्रम में उपस्थित थे । मेजर जनरल (सेवा निवृत्त) हरभजन (अंचल प्रभारी – अंचल १०) और भाई जुगल किशोर (यू–कनेक्ट के क्षेत्रीय समन्वयक) ने मिशन का प्रतिनिधित्व किया और सहभागियों के साथ अच्छा संवाद भी किया ।

ग्वालियर, मध्यप्रदेश

२० अक्तूबर को माधव शिक्षा महाविद्यालय, ग्वालियर के बी०एड० कॉलेज के विद्यार्थियों के लिये एस०डी०पी० कार्यक्रम का शुभारम्भ किया गया । इस कार्यक्रम का उद्देश्य युवाओं को जीवन जीने के लिये महत्वाकांक्षी मूल्य प्रदान करना, आध्यात्मिक लक्ष्य और नैतिक भौतिक जीवन पर केन्द्रित एक संतुलित जीवन प्राप्त करने में सहायता करना तथा देश के निर्माण में अपना योगदान करने में उनको सहायता प्रदान करना है । इसके सत्र सप्ताह में दो बार क्रमशः सोमवार और गुरुवार को संचालित किये जाते हैं ।

११वें सत्र में करीब २५ विद्यार्थी, विद्यालय के प्राचार्य और ४ प्रशिक्षक तथा यू–कनेक्ट के सदस्यों ने ग्वालियर आश्रम का भ्रमण किया । अब तक १३ विद्यार्थी और प्राचार्य ने सहज मार्ग अभ्यास प्रारम्भ कर दिया है और इस समूह को कॉलेज में ही साप्ताहिक सत्संग आयोजित करने की अनुमति मिल गयी है ।

बच्चों के कार्यक्रम

'उड़ान', दिल्ली ज़ोनल आश्रम

लगभग १३१ बच्चों ने २ नवम्बर को आयोजित एक पूर्ण दिवसीय कार्यक्रम में भाग लिया, जिसकी योजना, व्यवस्था और कार्यान्वयन युवा अभ्यासियों की टीम द्वारा किया गया। पाँच वर्ष से कम आयु के बच्चों का समूह और उनके माता-पिता 'गुरुदेव कहते हैं', दौड़, शिल्प, गायन और नृत्य जैसी गतिविधियों में व्यस्त रखे गये जबकि बड़े बच्चों को दौड़, रस्सा-कस्सी इत्यादि में सम्मिलित किया गया। उनका रचनात्मक पक्ष भी 'रद्दी से सर्वोत्तम बनाना' खेल में प्रकट हुआ। दिन के अंत में उन्होंने 'खज़ाने की खोज' खेल में भाग लिया, खज़ाना जिसमें उन्हें प्रकृति और पर्यावरण के प्रति प्रेम विकसित करने हेतु पौधे उपहार में दिये गये। अंत में एक भाई ने बच्चों को जीवन में अनुशासन के महत्त्व के बारे में बताया।

मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश

७ दिसम्बर को २५ बच्चों ने ग्रीटिंग-कार्ड प्रतियोगिता में भाग लिया, जिसका विषय 'धन्यवाद गुरुदेव' था। एक दूसरे के साथ आपसी सहयोग से कार्य करते हुए सुन्दर कार्ड तैयार करने में उनका उत्साह, टीम वर्क और उनके बीच की एकता प्रदर्शित हो रही थी। उनके प्रयासों की सराहना और प्रेम के चिह्न के रूप में, आयुवर्ग के आधार पर पुरस्कार वितरित किये गये।

गोवा

१६ नवम्बर को अभ्यासियों और उनके मित्रों के बच्चों के लिये एक पेंटिंग व ग्रीटिंग कार्ड बनाने की प्रतियोगिता आयोजित की गयी। बच्चों ने नाश्ता किया व आश्रम में खेल कूद का आनंद भी उठाया। उन्होंने गुरुदेव की वार्ता का वीडियो देखा जिसके बाद एक बहिन ने उनको मिशन व इसके उद्देश्य के बारे में बताया। साथ ही उन्हें यह भी बताया गया कि मिशन बच्चों में आत्म सुधार लाने और उनके पूर्णता की ओर विकास करने तथा उन्हें अच्छा मानव बनने में कैसे सहायता करता है।

बंगलौर, कर्नाटक

बनशंकरी आश्रम में २३ नवम्बर को संयुक्तराष्ट्र सार्वभौमिक बालदिवस के रूप में एक पूर्ण दिवसीय कार्यक्रम मनाया गया। प्रातः सत्संग के दौरान आश्रम, बच्चों के गीतों व लघु नाटकों के अभ्यास की गतिविधियों से, गुंजायमान हो रहा था।

सत्संग के बाद अभ्यासियों को 'पेरैंटहुड' नामक डी०वी०डी० से गुरुदेव की वार्ता के अंश तथा बाल-केन्द्र की गतिविधियों पर लघु फिल्म दिखायी गयी। कार्यक्रम का उद्देश्य अभ्यासियों को उनके बचपन में वापस ले जाना था। उन्होंने एक खेल में भाग लिया तत्पश्चात् अभ्यासियों को समूहों में विभाजित कर उन्हें बच्चों पर गुरुदेव के उद्धरण दिये गये। उन्हें दी गयी चुनौती यह थी कि उन उद्धरणों पर चिन्तन, चर्चा कर इसे कविता, लघु नाटिका या कोलाज के रूप में प्रस्तुत करना था।

६ वर्ष से कम वय के बच्चों ने बड़े प्रेमपूर्वक अभियान गीत प्रस्तुत किया। जो बच्चे ६ से ९ वर्ष के वय वर्ग में थे उन्होंने एक गीत और एक लघु नाटिका प्रस्तुत की। अभ्यासी समूहों की प्रस्तुति के बाद ९ वर्ष से ऊपर आयु के बच्चों ने एक समूह-गीत गाया और एक नाटिका प्रस्तुत की। यद्यपि उन्होंने सिर्फ सुबह से ही इस नाटिका का अभ्यास किया था, पर वे इसे आत्मविश्वास और खूबसूरती के साथ अभिनीत करने में सफ़ल हुये। सभी अभिभावक बच्चों के प्रदर्शन से काफी उत्साहित व प्रसन्न थे।

यू०पी० प्रशिक्षक संगोष्ठी

शाहजहाँपुर

उत्तर–प्रदेश के १५० प्रशिक्षकों ने १२ से १६ नवम्बर तक होने वाली पाँच दिवसीय संगोष्ठी में भाग लिया। संगोष्ठी मुख्यत: 'विनम्रता' जो कि महत्वहीनता तथा मासूमियत की अवस्था है, पर केन्द्रित थी; जिसको नियम–२ तथा नियम–१० के गहन अभ्यास द्वारा अनुभव किया जा सकता है तथा प्राप्त किया जा सकता है।

इस संगोष्ठी में व्यवहार के स्वरूप तथा चरित्र के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने पर विस्तार से चर्चा की गयी। संगोष्ठी समाप्त होने तक प्रत्येक ने अपने व्यवहार का अवलोकन करने, उसमें सुधार करने तथा प्रार्थना की हालत में सुझाव देने की आवश्यकता को अनुभव किया। संगोष्ठी का सबसे अच्छा व महत्वपूर्ण भाग प्रिय गुरुदेव द्वारा पूरे संगोष्ठी के दौरान उत्पन्न की गयी विशेष हालत थी। सभी प्रतिभागियों, जो इस कार्यक्रम में उपस्थित थे, के लिये यह एक विनम्रता से भरा गहन अनुभव था।

व्हिस्पर्स पर कार्यक्रम

हैदराबाद, आन्ध्र प्रदेश

यह कार्यक्रम ५ से ७ दिसम्बर तक कान्हा शान्ति वनम आश्रम में आन्ध्र–प्रदेश तथा तेलंगाना के १०० अभ्यासियों के लिये आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य 'व्हिस्पर्स' पढ़ने की आवश्यकता तथा इसे अपनी दैनिक साधना का अंग बनाने के प्रति सराहना व गहन जागरूकता प्रदान करना था। कार्यक्रम का उद्देश्य प्रतिभागियों को यह सुझाव देना भी था कि रविवारीय सत्संग तथा अन्य आध्यात्मिक कार्यक्रमों में 'व्हिस्पर्स' को कैसे पढ़ा जाये।

कार्यक्रम में विभिन्न प्रासंगिक विषयों, जैसे व्हिस्पर्स का महत्व, व्हिस्पर्स को समझने का तरीका, गुरुदेव के विषय में, तथा सेवा के विषय सम्मिलित थे। सन्देशों को अग्रेज़ी तथा तेलुगु भाषा में पढ़ा गया तथा अभ्यासियों को सन्देश के अर्थ पर मनन करने का समय दिया गया। ऐसा तीनों दिन किया गया तथा बीच–बीच में बाबूजी के वीडियो दिखाये गये तथा चुने हुये विषयों पर गुरुदेव और कमलेश भाई द्वारा दी गयी वार्तायें सुनायी गयीं।

आयोजकों ने बताया कि अभ्यासी ऐसे कार्यक्रम अपने–अपने केन्द्रों पर किस प्रकार आयोजित कर सकते हैं। इस आश्रम में इस प्रकार का यह पहला कार्यक्रम था और एक पूर्ण रूप से समर्पित स्वयंसेवकों के दल ने यह सुनिश्चित किया कि हर चीज सुचारु रूप से चले। प्रतिभागियों ने इस स्थान की नि:शब्दता तथा शांति को अनुभव किया और ऐसे कार्यक्रम आयोजित करने के लिये इस स्थान को उपयुक्त पाया।

दस नियमों पर कार्यशाला

इन्दौर, मध्य प्रदेश

१२ से १४ दिसम्बर तक आयोजित इस आवासीय कार्यक्रम में इन्दौर तथा आस–पास के केन्द्रों के ४१ अभ्यासियों ने भाग लिया। १२ तारीख को सत्संग के साथ इस कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ। हर एक नियम के लिये एक अलग सत्र रखा गया तथा वह नियम जिस भी तत्वज्ञान पर आधारित है, उस पर चर्चा की गयी। साथ ही बताया गया कि किस प्रकार ये नियम लक्ष्य तक पहुँचने में अभ्यासियों की सहायता करते हैं, जैसा कि बाबूजी महाराज ने 'दस नियमों की व्याख्या' नामक पुस्तक में बताया है। इस कार्यशाला में प्रत्येक नियम के व्यावहारिक पहलू, इसमें आने वाली समस्यायें तथा उनके उपायों पर भी चर्चा की गयी।

जैसे–जैसे ये सत्र आगे बढ़ते गये, प्रतिभागियों ने अधिक से अधिक लीनता का अनुभव किया। साथ ही दस नियमों के प्रति उनकी समझ और उनका पालन करने के प्रति उनकी हार्दिक प्रेरणा गहरी होती गयी। इस कार्यक्रम की तैयारी एक महीना पहले ही आरम्भ हो गयी थी। प्रत्येक नियम के लिये दो–दो अभ्यासियों ने मिलकर एक प्रस्तुतिकरण तैयार किया जिसके बाद समूह चर्चा की गयी।

श्री राम चंद्र मिशन एकोज़ इंडिया समाचार पत्र

तेलुगु प्रकाशन कार्यशाला

हैदराबाद

२९ और ३० नवम्बर को थुमकुण्टा आश्रम में विभिन्न प्रकाशन गतिविधियों के लिये मौजूदा टीमों के विस्तार और नयी टीमों के गठन करने हेतु १०० अभ्यासियों की एक कार्यशाला का आयोजन किया गया ।

प्रथम दिवस के अन्त तक निम्नलिखित टीमों का गठन किया गया:

पुस्तक अनुवाद, सहज मार्गमु पत्रिका, इकोज न्यूजलेटर, उपशीर्षक देना, विविध, गोल्ड कापी, तकनीकी, ऑडियो बुक्स, सामान व्यवस्था एवम् बिक्री प्रचार । प्रत्येक टीम में कुछ समन्वयक, अनुवादक, समीक्षक, प्रूफ़ रीडर और तकनीकी कार्यकर्ता होंगे । दूसरे दिन इन सभी टीमों ने आपस में विचार विमर्श किया और अगले एक महीने की कार्य योजना को प्रस्तुत किया ।

आपस में सम्पर्क में रहने के लिये एक इलेक्ट्रौनिक मंच बनाया गया, जहाँ सभी लोग कार्य से सम्बन्धित विभिन्न विषयों पर विचार विमर्श कर सकें, जहाँ प्रश्नों का उत्तर दिया जा सके और अनुभवों को आपस मे बाँटा जा सके । सभी प्रतिभागियों ने बहुत अधिक उत्साह दिखाया । वे सभी काम की गहरी जागरूकता और इस प्रयास का एक हिस्सा बनने के तीव्र उत्साह के साथ वापस लौटे ।

क्षेत्रीय सम्मेलन

कोल्हापुर, महाराष्ट्र

१६ नवम्बर को कोल्हापुर में पहली बार क्षेत्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें कोल्हापुर, सातारा, कराड, मिरज, कुरलप, रत्नागिरि, सावंतवाडी और सांगली से करीब २०० अभ्यासियों और २५ बच्चों ने भाग लिया । भाई सुभाष वैद्य (अंचल प्रभारी, एमएच –५ ए) ने सत्संग के पश्चात् सभा को सम्बोधित किया । सभी निकट के केन्द्रों के प्रशिक्षक भी वहाँ मौजूद थे । हर एक ने उनको दिये गये विषय पर वार्ता दी ।

सभी वार्तायें अच्छी तरह संरचित एवम प्रेरणादायक थीं । उन्होंने साधना के विभिन्न पहलुओं पर एक नयी समझ प्रदान की । हाल ही में शामिल हुये नये अभ्यासियों ने बताया कि सहज मार्ग अभ्यास के बारे में अब उनकी समझ पहले से ज्यादा अच्छी हो गयी है ।

तन्जावूर, तमिलनाडु

तन्जावूर हब के ६४ अभ्यासियों और १६ फ़ेसिलिटेटर्स के लिये 'सहज मार्ग का अभ्यास और सहज मार्ग में अभ्यासी की भूमिका' विषय पर जेनबागपुरम आश्रम, तन्जावूर में, २९ और ३० नवम्बर को तमिल भाषा में दो दिवसीय आवासीय कार्यक्रम आयोजित किया गया।

कार्यक्रम में सहज मार्ग का अभ्यास, चरित्र निर्माण, एसोटेरिक प्रतीक और सहज मार्ग जीवन शैली का व्यवहारिक क्रियान्वयन जैसे विषयों पर प्रकाश डाला गया ।

कार्यक्रम का प्रारम्भ सत्संग और एक परिचयात्मक भाषण के साथ किया गया, जिसका विषय था 'सहज मार्ग अभ्यास का महत्व, अभ्यासी की स्वयं के प्रति जिम्मेदारी और मन की सन्तुलित अवस्था को प्राप्त करने के साधन' । कार्यक्रम के दौरान प्रत्येक प्रतिभागी को प्रशिक्षण सामग्री दी गयी जिसमें अभ्यास से सम्बन्धित कुछ पुस्तकें और सम्पूर्ण सहज मार्ग अभ्यास के बारे में कोर्स मार्गदर्शिका सम्मिलित थी । प्रत्येक फ़ेसिलिटेटर को पूरे कार्यक्रम के दौरान पाँच अभ्यासियों का समूह आवंटित किया गया था । सभी समूहों में प्रत्येक विषय पर विस्तार से चर्चा हुई, समूह के सभी प्रश्नों के उत्तर दिये गये तथा उन सभी को एक समूह चर्चा में भी सम्मिलित किया गया । साधना से सम्बन्धित बातों पर गुरुदेव की वार्ता की डी०वी०डी० भी दिखायी गयी । कार्यक्रम का समापन फ़ीडबैक सत्र और सत्संग के साथ हुवा ।

श्री राम चंद्र मिशन

एकोज़ इंडिया समाचार पत्र

समाचार झलकियाँ

हुबली, उत्तरी कर्नाटक

१४ दिसम्बर को 'बच्चों की परवरिश एवम रिश्तों' पर एक सत्र का आयोजन किया गया । इसमें हुबली, कल्लूर, धारवाड़, नवनगर और काडपट्टी के ७० से ज्यादा अभ्यासियों ने भाग लिया ।

हुबली

केन्द्र भ्रमण, तमिलनाडु

१९ अक्टूबर को करुमाथमपट्टी के १४ अभ्यासियों ने कूनूर और ऊटी केन्द्र का भ्रमण किया । सभी अभ्यासी सत्संग में शामिल हुये तथा उन्होंने नियमित अभ्यास और गुरुदेव के प्रति प्रेम उत्पन्न करने के बारे में अपने विचारों को साझा किया । वे सभी कूनूर और ऊटी के अभ्यासी भाईयों द्वारा प्रदर्शित आतिथ्य एवम् भाईचारे से बहुत प्रभावित हुये ।

ऊटी

गोला गोकरणनाथ

वेल्लौर, तमिलनाडु

'सतत स्मरण' पर वदाविरिन्चिपुरम आश्रम वेल्लौर में ८ और ९ नवम्बर को एक दो दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें आस पास के केन्द्रों से करीब २४ अभ्यासियों ने भाग लिया ।

वेल्लौर

गोला गोकरणनाथ, उत्तर प्रदेश

पुरुषोत्तम बाल विद्या मन्दिर स्कूल में एक शिक्षक प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें नेताजी सुभाष चन्द्र बोस स्कूल और पुरुषोत्तम बाल विद्या मन्दिर के २३ शिक्षकों ने भाग लिया ।

वडोदरा

वडोदरा, गुजरात

'जीवनमूल्य एवम् नेतृत्व' इस विषय पर बड़ौदा हाईस्कूल ,अलकापुरी में सीनियर सेकन्डरी कक्षाओं के लिये दो कार्यक्रमों का आयोजन किया गया । छात्रों ने संवादात्मक सत्र का आनन्द लिया, जिससे उन्हें अपने आत्म विश्वास और आत्म सम्मान को बढ़ाने में मदद मिली ।

ग्राउंडिंग इन द प्रैक्टिस – प्रशिक्षण कार्यक्रम

पूरे भारत में केन्द्रों में आयोजित जी०आइ०टी०पी० सत्र की कुछ तस्वीरें यहाँ देखी जा सकती हैं ।

जोधपुर

सिरसी

पटियाला

सिरोही

गोवा

पालक्कड

श्री राम चंद्र मिशन

एकोज़ इंडिया समाचार पत्र

साथुपल्ली आश्रम, तेलंगाना

प्रकाश का केन्द्र

साथुपल्ली तेलंगाना राज्य के जिला खम्मम में एक कस्बा है । यह कस्बा विजयवाड़ा से लगभग १०० कि०मी० दूर है । निकटतम रेलवे स्टेशन खम्मम है, जोकि जिला मुख्यालय भी है और विजयावाड़ा तथा वारंगल के बीच में स्थित है ।

१९८०–१९९० के दौरान साथुपल्ली में लगभग १० अभ्यासी सहज मार्ग का अभ्यास कर रहे थे । १९९० में एक प्रशिक्षक भाई पी सूर्या भासकरम खम्मम जिले के बेलमपल्ली से स्थानान्तरित होकर कोठागुडेम आये । वे लगभग ६० कि० मी० की यात्रा करके साथुपल्ली में अभ्यासियों से मिलने आते थे । उनके बार–बार यहाँ आते रहने से अभ्यासियों की संख्या वर्ष १९९७–९८ तक १० से बढ़कर २० हो गयी ।

एक अभ्यासी भाई ने खम्मम से राजामुन्द्री जाने वाली मुख्य सड़क से लगी हुई और कस्बे के मध्य में स्थित लगभग २७८ वर्ग गज क्षेत्र भूमि आश्रम बनाने के लिये दान में दी । यह भूमि २६ फरवरी १९९२ को श्री राम चन्द्र मिशन के नाम में पंजीकृत की गयी । आश्रम भवन का निर्माण आर०सी०सी० स्लैब के साथ किया गया जो वर्ष १९९८ में अभ्यासियों और स्थानीय लोगों द्वारा दिल खोलकर दिये गये दान में प्राप्त धनराशि से पूरा हुआ। आश्रम के चबूतरे का क्षेत्रफल है – ध्यानकक्ष (५४५ वर्ग फ़ुट) और रसोईघर (२०० वर्ग फुट), कुल भूमि का क्षेत्रफ़ल २५०२ वर्ग फ़ुट। आश्रम में एक सुसज्जित पुस्तकालय है, जिसमें एक कम्प्यूटर, एक प्रिंटर तथा इन्टरनेट संयोजन है । इस आश्रम का उद्घाटन भाई एस०ए०सरनाड जी द्वारा २७ जून १९९४ में किया गया । छत पर दो अतिरिक्त कक्ष और एक खुला हुआ हॉल वर्ष २०११ में भोजन करने और रसोईघर भण्डार के लिये बनाये गये । इसका उद्घाटन २ फरवरी २०११ में हुआ था।

लगभग ४० अभ्यासी आश्रम की गली में ही रहते हैं और वे हर दिन प्रात: ५.०० से ६.००, ९.०० से १०.०० तथा शाम ५.०० से ६.०० बजे सत्संग के लिये आश्रम में एकत्रित होते हैं । आश्रम में नित्य सुबह ११ बजे से दिन के १ बजे तक व्हिस्पर्स संदेश और मिशन का साहित्य पढ़ा जाता है ।

खम्मम और कोठागुडेम केन्द्रों के प्रशिक्षक व्यक्तिगत सिटिंग देने और पूर्ण दिवसीय कार्यक्रम संचालित करने के लिये इस केन्द्र में आते रहते हैं ।

वर्तमान में अभ्यासियों की संख्या अस्सी से अधिक हो गयी है । नये अभ्यासियों सहित सभी अभ्यासियों ने, अगस्त और सितम्बर २०१३ में साथुपल्ली केन्द्र में आयोजित जी०आई०टी०पी० कार्यक्रम में सहभागिता की है ।

To download or subscribe to this newsletter, please visit http://www.sahajmarg.org/newsletter/india For feedback, suggestions and news articles please send email to in.newsletter@srcm.org

© 2015 Shri Ram Chandra Mission ("SRCM"). All rights reserved. “Shri Ram Chandra Mission", "Sahaj Marg", “SRCM”, “Constant Remembrance” and the Mission's Emblem are registered Trademarks of Shri Ram Chandra Mission.This Newsletter is intended exclusively for the members of SRCM. The views expressed in the various articles are provided by various volunteers and are not necessarily those of SRCM.